SOCIAL STUDIES

Class 10th

(GEOGRAPHY)

Chapter 1: संसाधन एवं विकास

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

पाठ्यपुस्तक से संक्षेप में लिखें

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) लौह अयस्क किस प्रकार का संसाधन है?
(क) नवीकरण योग्य (ख) प्रवाह।
(ग) जैव। (घ) अनवीकरण योग्य
उत्तर (i) (घ)अनवीकरण योग्य

(ii) ज्वारीय ऊर्जा निम्नलिखित में से किस प्रकार का संसाधन है?
(क) पुनः पूर्ति योग्य। (ख) अजैव
(ग) मानवकृत। (घ) अचक्रीय
उत्तर (ii) (क)पुनः पूर्ति योग्य।

(iii) पंजाब में भूमि निम्नीकरण का निम्नलिखित में से मुख्य कारण क्या है?
(क) गहन खेती। (ख) अधिक सिंचाई
(ग) वनोन्मूलन। (घ) अति पशुचारण
उत्तर (iii) (ख)अधिक सिंचाई

(iv) निम्नलिखित में से किस प्रांत में सीढ़ीदार (सोपानी) खेती की जाती है?
(क) पंजाब। (ख) उत्तर प्रदेश के मैदान
(ग) हरियाणा। (घ) उत्तरांचल
उत्तरः- (iv) (घ)उत्तरांचल

(v) इनमें से किस राज्य में काली मृदा पाई जाती है?
(क) जम्मू और कश्मीर। (ख) राजस्थान
(ग) गुजरात। (घ) झारखंड
उत्तरः- (v) (ग) गुजरात।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए
(i) तीन राज्यों के नाम बताएँ जहाँ काली मृदा पाई जाती है। इस पर मुख्य रूप से कौन-सी फसल उगाई जाती है?
उत्तरः-गुजरात, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में काली मृदा पायी जाती है। इस पर मुख्य रूप से कपास की फसल उगाई जाती है।

(ii) पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर किस प्रकार की मृदा पाई जाती है? इस प्रकार की मृदा की तीन मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ?
उत्तरः- पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर जलोढ़ मृदा पाई जाती है। जलोढ़ मृदा की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

1. जलोढ़ मृदाएं बहुत उपजाऊ होती है।
2. अधिकतर जलोढ़ मृदाएँ पोटाश, फास्फोरस और चूनायुक्त होती हैं जो गन्ने, चावल, गेहूँ और दलहन फसलों के लिए उपयुक्त होती हैं।
3. अधिक उपजाऊपन के कारण जलोढ़ मृदा वाले क्षेत्रों में गहन कृषि की जाती है।

MUKUTclasses

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाने चाहिए?
उत्तर:- पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए-

1. ढाल वाली भूमि पर समोच्च जुताई करनी चाहिए। इससे जल बहाव की गति घटती है।
2. पहाड़ी ढाल वाली भूमि पर सोपान बनाए जाने चाहिए। सोपान मृदा अपरदन को नियंत्रित करते हैं।
3. पश्चिमी और मध्य हिमालय में सोपान अथवा सीढ़ीदार कृषि काफी विकसित है।
4. पर्वतीय क्षेत्रों में खेतों के किनारे घास की पट्टियाँ उगाई जानी चाहिए।
5. पहाड़ी क्षेत्रों में खेतों के किनारे पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनानी चाहिए।

(iv) जैव और अजैव संसाधन क्या होते हैं? कुछ उदाहरण दें।
उत्तर:- **जैव संसाधन**- जैव संसाधन वे सभी वस्तुएं होती है जिनमें जीवन व्याप्त है, जैसे- मनुष्य, वनस्पति जगत, प्राणी जगत, पशुधन तथा मत्स्य जीवन आदि। जैव संसाधन हमें जीवमंडल से प्राप्त होते है।
अजैव संसाधन-वे सारे संसाधन जो निर्जीव वस्तुओं से बने हैं, अजैव संसाधन होते हैं, जैसे-चट्टानें और धातुएँ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए

(i) भारत में भूमि उपयोग प्रारूप का वर्णन करें। वर्ष 1960-61 से वन के अंतर्गत क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई, इसका क्या कारण है?
उत्तर:- भारत में उपयोग का प्रारूप:-

1. शुद्ध बोया गया क्षेत्र- 45.5 प्रतिशत।
2. वन भूमि- 23.3 प्रतिशत।
3. भूमि बंजर और कृषि अयोग्य भूमि- 5.5 प्रतिशत।
4. गैर कृषि प्रयोजन के अंतर्गत- 8.7 प्रतिशत।
5. अन्य भूमि क्षेत्र- 17 प्रतिशत।

वर्ष 1960-61 से वन के अंतर्गत क्षेत्र में बहुत कम वृद्धि हुई है। इसके निम्न कारण हो सकते हैं।

1. भारत में बढ़ती जनसंख्या की आवासीय भूमि के लिए वनों की लगातार कटाई हो रही है।
2. भवनों के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली लकड़ियां के लिए पेड़ों को काटा गया है।
3. औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अंधाधुंध खनन हो रहा है जिससे वन क्षेत्र कम होता जा रहा है।
4. जलवायु परिवर्तन से भी वन क्षेत्र में वृद्धि नहीं हो पाई।

(ii) प्रौद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण संसाधानों का अधिक उपभोग कैसे हुआ है ?
उत्तर:- प्रौद्योगिकी और आर्थिक विकास के कारण संसाधनों का अतिउपभोग निम्न प्रकार से हुआ है-

1. आर्थिक विकास संसाधनों का दोहन करने के लिए बाध्य करता है जिससे उनका अति दोहन होता है।
2. प्रौद्योगिकी के विकास से लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है। इससे मानवीय आवश्यकताएँ बढ़ती है और संसाधानों का विवेकहीन इस्तेमाल होता है।
3. प्रौद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण नए नए जिनके लिए कच्चे माल के रूप में खनिज संसाधनों का अधिक उपभोग होता है।